समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• सितम्बर २०२२ • वर्ष ७३ • अंक ०९
मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

४ सितम्बर २०२२ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की बैठक कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में बैंगलोर में सम्पन्न हुयी। दीप प्रज्जवलन करते राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया। साथ में निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण श्री भानीराम सुरेका, श्री पवन कुमार गोयनका, श्री पवन कुमार सुरेका, श्री अशोक कुमार जालान, श्री विजय कुमार लोहिया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका, कर्नाटक प्रांत के अध्यक्ष डॉ. सुभाष अग्रवाल, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री सुदेश अग्रवाल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री बसंत कुमार मित्तल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका, कर्नाटक प्रांत महिला सम्मेलन की नयी अध्यक्षा श्रीमती माया अग्रवाल सहित श्रीमती जया चौधरी, श्री अरुण कुमार खेमका एवं श्री सीताराम अग्रवाल परिलक्षित हैं।

वार्षिक साधारण सभा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया के अध्यक्षता में कोलकाता स्थित सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय में १८ सितम्बर २०२२ को सम्पन्न हुयी। उपरोक्त चित्र में राष्ट्रीय पदाधिकारीगण, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण एवं सदस्यगण परिलक्षित हैं।

इस अंक में :

सम्पादकीयः सद्भाव, समरसता ही प्रगति का मूल है
अध्यक्षीयः गौरवशाली इतिहास की नींव पर भविष्य के भव्य भवन का निर्माण किया जा सकता है।
रपटः राष्ट्रीय अध्यक्ष का दौरा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक
वार्षिक साधारण सभा
संगोष्ठीः मारवाड़ी समाज-वर्तमान परिप्रेक्ष्य
प्रांतीय समाचारः तेलंगाना, कर्नाटक, उत्कल, महाराष्ट्र, बिहार

Rungta Office, Nagar Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand- 833201
Email - tmtsales@rungtasteel.com

समाज विकास

◆ सितम्बर २०२२ ◆ वर्ष ७३ ◆ अंक ९
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** सद्भाव, समरसता ही प्रगति का मूल है	४-५
● **अध्यक्षीय : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** गौरवशाली इतिहास की नींव पर भविष्य के भव्य भवन का निर्माण किया जा सकता है	६
● **रपट –**	
राष्ट्रीय अध्यक्ष का दौरा	७-८
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक	९-१०
वार्षिक साधारण सभा	११
संगोष्ठी : मारवाड़ी समाज - वर्तमान परिप्रेक्ष्य	१३
● **चिंतन –** संस्कारों की नाव पर समय की धार पर...	१४
● **प्रादेशिक समाचार** तेलंगाना, कर्नाटक, उत्कल, महाराष्ट्र, बिहार	१५-२२
● **समाचार सार –** आत्माराम सोंथलिया का सम्मान	२३
● **विविध –** दो लघुकथावां	२४-२५
● **देव-स्तुति :** डॉ. जुगल किशोर सर्राफ	२६

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९
पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.in

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ **प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा** ◆ **सम्पादक : शिव कुमार लोहिया**

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

राजस्थान साहित्य अकादमी

क्रमांक - रासयाअ / समारोह/2022-23/780 दिनांक - 31.8.22

श्री शिवकुमार लोहिया
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन,
4बी, डकबैक हाउस, 41, शेक्सपीयर सरणी,
कोलकाता - 700017

महोदय,

राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पद पर मनोनीत होने पर आपकी शुभकामनाए प्राप्त हुई आभार एवं धन्यवाद। हम और आप जुड़े रहेंगे, ऐसी कामना करता हूँ।

धन्यवाद।

भवदीय

(डॉ. दुलाराम सहारण)
अध्यक्ष

सम्पादक, भाई श्री शिव कुमार जी,

नमस्कार,

अगस्त २०२२ के मुखपत्र '**समाज विकास**' का सम्पादकीय पृष्ठ पढ़ा। बहुत ही शानदार सम्पादकीय रचना है।

बहुत ही सुन्दरता से आपने, पुराने-जोशीले लोक-प्रिय देश-भक्ति के राष्ट्रीय गीतों की पंक्तियों को लेख में पिरो कर अभिव्यक्त किया है। इतने सुन्दर लेख के लिये आपका आभार।

समाज सुधार

यह बात मुझे बराबर पीड़ित करती है कि अपने समाज सुधारकों एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मन्च से हम बहुत सी समाज-सुधार व परिवर्तन की बातें सुनते हैं पर, समाज तो दूर, सुधार सुझाने वालों को न तो उन्हें स्वयं अमल करते देखा है न ही उन दिशाओं मे उनका कोई प्रयास देखा है। स्पस्ट है, सिर्फ दुसरे लोगों के वास्ते कही जा रही हैं। उदाहरणतः, इसी पत्रिका के पृष्ठ ३ पर मोटे अक्षरों मे शादीयों मे मद्यपान व शादी-पूर्व शूट की रोक की स्पष्ट अनुरोध है। ऐसा मानने व आग्रह करने वाले एवं हम जानते हुए भी कितने ऐसी शादी मे नहीं जाते या, वहाँ इन प्रक्रियाओं को देख उनका बहिष्कार कर, वहाँ से तुरन्त निकल पड़ते हैं? स्पष्ट है कि कोई सुधार नही होते और यह खोखला ढ़कोसलापन है।

एक ही महत्वपूर्ण बदलाव, सदियों पूर्व हमारे पुर्वजों ने लाया था, जो याद है, दिखता है, एवं अत्यन्त लाभदायक साबित हुआ है। वह है बारात मे बाजे बन्द करवाना। पर अब इसमे भी पूरी तरह ढ़िलाईयां दिखने लगी हैं और किसी भी प्रभावशाली व्यक्ति को ढ़िलाईया रोकने का प्रयास करते हुए हम नहीं देखते है।

मुझे दुख है कि, बदलाव लाये नहीं जा रहे हैं, पतन के कगार पर है।

धन्यवाद,

सुनील रुँगटा, कोलकाता

संलग्न चित्र स्व-संवेद्य है। इस तरह के लेख से स्वयं और समाज दोनो हीन भाव को प्राप्त होते है। कृपया विचार करें।

– मोहन बेरीवाला

(आपके पत्र के लिये धन्यवाद। किसी हीन भावना को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से यह लेख प्रकाशित नही किया गया है। समाज में अंध विश्वास किस तरह फैलता है, यह दर्शाना ही एकमात्र उद्देश्य है।

– सम्पादक)

सद्भाव, समरसता ही प्रगति का मूल है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। इसके मूल में भारतीय समाज की आध्यात्मिकता दृष्टिगोचर होती है। वैदिक काल से ही यहाँ आत्मिक उत्कर्ष का सिद्धांत चला आ रहा है। अनेकों बार विदेशी आततायियो ने हम पर आधिपत्य जमाया पर भारतीय सभ्यता की जड़ को क्षति नहीं पहुँचा सके। सूर्य की किरणों से पौधों को जीवनी शक्ति मिलती है पर उसका आधार जमीन के अंदर समाहित जड़े ही होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमने अपनी सुध लेनी प्रारम्भ की, हमने प्राय: सभी क्षेत्रों में हमने उल्लेखनीय प्रगति की है। हाल ही में, हम हमारे शोषणकर्ता ब्रिटेन को पछाड़ कर विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बन कर उभरे हैं। नोबल पुरस्कार विजेता अमेरीकी अर्थशास्त्री पाल क्रुगमैन ने स्वीकार किया है कि भारत ने तेजी से आर्थिक प्रगति की है। उनके अनुसार पिछले तीस वर्षों में भारत ने जितनी आर्थिक प्रगति हासिल की है, ब्रिटेन ने उतनी प्रगति १५० वर्षों में की है। लेकिन साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा है कि देश में आर्थिक असमानता एक बहुत बड़ा मुद्दा है। अभी भी भारत में गरीबी देखने को मिलती है। धन का समान रुप से वितरण नहीं हुआ। फिलहाल देश में जर्मनी से अधिक अरबपति हमारे देश में है। विश्व के सबसे अधिक धनी १० व्यक्तियों में से हमारे देश के दो व्यक्ति शामिल हैं। साथ-साथ आठ करोड़ व्यक्ति गरीबी रेखा से नीचे अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। देश की तकरीबन ६८ प्रतिशत जनसंख्या अभी भी गाँव में रहती है।

एक बात का हमें ध्यान रखना चाहिए कि स्वतंत्रता का अर्थ है - हर कृत्य के लिये स्वयं जिम्मेदार होना। वास्तव में भारत एक सुप्त महाशक्ति है। उस महाशक्ति के जागृत होने पर फिर से एक बार विश्व को अपना नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता रखता है। हमारे पास दक्ष, कुशल एवं पर्याप्त मानव संसाधन है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था - भारत माता चाहती है कि उसके पुत्रों की नस-नस में एक नवीन शक्ति का संचार हो। लोग साहसी बने, कायरता से घृणा करें। संकीर्णता एवं स्वार्थपरता कायरता के चिन्ह हैं। आदर्श के मार्ग पर चलते हुए जो कष्ट उठाने पड़ते हैं, उन्हें प्रसन्नतापूर्वक शिरोधार्य करना ही साहस एवं वीरता है। कायर घड़ी-घड़ी मरते हैं पर वीर पुरुष केवल एक बार ही मरते हैं और वह भी शानदार परम्परा स्थापित करते हुए। अत: हमारे संसाधनों, संभावनाओं एवं शक्तियों का पुरजोर उपयोग करके हम असाधारण प्रगति कर सकते हैं, इसके लिए सर्वप्रथम हमें अपनी दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करना होगा। मनुष्य तभी तक मनुष्य है जब तक वह पशु प्रकृति से उपर उठने के लिये प्रयासरत रहता है। जीवन की समस्याओं, भावनाओं, वासनाओं एवं आकांक्षाओं को समझकर नियंत्रित करना अति महत्वपूर्ण है। समाज एवं देश के प्रत्येक सम्प्रदाय, वर्ग को महसूस होना चाहिए कि हम समाज के अंग है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति वहां के देशवासियों के सोच पर निर्भर है। सामाजिक एकता एक अति आवश्यक उपादान है। समाज में एकता की पूर्व शर्त है – सामाजिक समता। समता के साथ एकता अपने आप आ जाती है। स्वभाव, क्षमता और वैचारिक स्तर पर विविधता स्वाभाविक है। भाषा, खान-पान, देवी-देवता, पंथ-सम्प्रदाय तथा जाति व्यवस्था में भी विविधता रहेगी। परन्तु यह विविधता हमारे आत्मीयता में बधक नहीं होना चाहिए।

लोग सोचते है कि सब कुछ सरकार करेगी। देश वासियों के योगदान के बिना उल्लेखनीय प्रगति संभव नहीं। नागरिकों का पहला कर्त्तव्य है एक दूसरे के प्रति बंधुभाव रखना। इससे समरसता में बढ़ावा मिलता है। प्रगति के बावजूद देश में अलगाववाद, जाति-धर्म के नाम पर संघर्ष बढ़े हैं। यह एक सोचनीय विषय है। विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने के लिये प्रत्येक नागरीक को कमर कसना होगा। ये स्वप्न ही विचारों में परिवर्तित होंगे। ये विचार कार्य में परिणित होंगे एवं सफलता का कारण बनेंगे। युवाओं का अदम्य उत्साह, क्षमता और रचनात्मक योगदान विश्व में भारत को उसका अभीष्ट स्थान दिलाने की क्षमता रखता है। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रज्जवलित युवा शक्तिशाली इंजन का काम करेंगे। पिछले ७५ वर्षों की प्रगति की बुनियाद से अब एक ऊंची छलांग लगाने का समय आ गया है। प्रत्येक नागरिकों को स्वयं को समस्या से नहीं बल्कि समाधान के साथ जोड़ना है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं पर ध्यान देना है। स्वयं में वह बदलाव लाये, जो आप दूसरों में देखना चाहते हैं। बदलाव स्वयं से शुरु हो। प्रत्येक नागरिक को स्वयं से, समाज से एवं सरकार से सही प्रश्न करना है। हमें यह सोचना है कि क्या बाते हैं, क्या कारण है जो कि हमे शिखर पर जाने से रोक रहा है। पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि अगर सही प्रयास करे तो हमारी प्रगति हमें ही आश्चर्यचकित कर देगी। बड़े संकल्पों के साथ बड़े कदम का समय है आज।

समाज का कुछ तबका अपनी स्वार्थपरता के वशीभूत समाज के विभिन्न घटकों में वैमनस्य पैदा करने में प्रयासरत हैं। वे देश में सौहार्द का माहौल देखना चाहते हैं। आपस में बंधुत्व भाव समय की मांग है। आपसी संबंधों में गांठ न लगे, इस पर हमें चौकस रहना है। इस संदर्भ में भगवान बुद्ध की वाणी से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। एक दिन बुद्ध सभा में अपने हाथ में कुछ लेकर आये। शिष्यों ने देखा उनके हाथ में एक रस्सी थी। आसन ग्रहण करने के बाद बुद्ध उस रस्सी में गांठ लगाने लगे। तब उन्होंने प्रश्न किया मैंने इस रस्सी में गांठे लगा दी है। आपलोगों से मैं यह जानना चाहूँगा कि क्या यह वहीं रस्सी है जो गांठे लगाने से पूर्व थी?

एक शिष्य ने उत्तर दिया - एक दृष्टिकोण से देखे तो यह वहीं रस्सी है, इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है। दूसरे दृष्टिकोण से सोचे तो इसमें अब तीन गांठे लगी हुई है, अत: इसे बदला हुआ

कह सकते हैं। इसका बुनियादी स्वरूप तो वही है फिर भी पहले एवं बाद का अंतर तो स्पष्ट है।

सत्य है, बुद्ध ने कहा, मैं इन गांठो को खोल देता हूँ, यह कहकर बुद्ध ने रस्सी के दोनों सिरों को एक दूसरे से दूर खीचने लगे। उन्होंने कहा तुम्हें लगता है इस प्रकार इन्हें खींचने से क्या मैं इन गांठो को खोल सकता हूँ।

"नहीं-नहीं" ऐसा करने से तो ये गांठे और भी कस जायेगी और इन्हें खोलना और मुश्किल हो जायेगा, एक शिष्य ने शीघ्रता से उत्तर दिया।

बुद्ध ने कहा - "ठीक है, अब आखिरी प्रश्न, बताओ, उन गांठो को खोलने के लिए हमें क्या करना होगा।" शिष्य बोला - "इसके लिए हमें इन गांठो को गौर से देखना होगा, ताकि हम जान सके कि इन्हें कैसे लगाया गया था। फिर हम इन्हें खोलने का प्रयास कर सकते हैं।

बुद्ध ने कहा बिल्कुल ठीक। मूल प्रश्न यही है कि जिस समस्या में तुम फंसे हो वास्तव में उसका कारण क्या है, बिना कारण जाने निवारण असम्भव है। अधिकतर लोग बिना कारण जाने ही निवारण करना चाहते हैं। लोग मुझसे यह नहीं पूछते क्रोध क्यों आता है। लोग पूछते हैं कि मैं अपने क्रोध का अंत कैसे करूँ? कोई यह प्रश्न नहीं करता कि मेरे अंदर अहंकार का बीज कहां से आया। लोग पूछते हैं कि मैं अपना अहंकार कैसे खत्म करूँ।

इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि गांठ को खोलने के लिये अत्यधिक सावधानी की जरूरत होती है। विभिन्न समुदायों में जो भी मतभेद है उसका हल संवाद द्वारा निकाला जाना चाहिए। आंख के बदले आंख वाले रास्ते को अपनाने से अंधों की संख्या बढ़ जायेगी। समस्या ज्यों की त्यों बनी रहेगी। कोई भी देश सामाजिक तनाव एवं आपसी संघर्ष के रहते आगे नहीं बढ़ सकता। अगर हम स्वयं को विकसित देश के रूप से स्थापित करना चाहते हैं, तो सब प्रकार के आपसी भेदभाव को समाप्त करना होगा। जिस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम में सभी समुदाय एक स्वर में आजादी की मांग कर रहे थे, उसी के लिये जी रहे थे, उसी के लिए मर रहे थे, उसी प्रकार हमें भव्य भारत, समृद्ध भारत के लिए एक स्वर में एक होकर एक लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ना होगा। देश को बदलना है तो उसके पहले हमें स्वयं में आवश्यक बदलाव लाना होगा। समस्या तो तब होती है जब लोग बदलाव तो चाहते हैं पर स्वयं को बदलना नहीं चाहते। आज की स्थिति यह है कि न्याय अदालतों में होने की जगह, सड़कों पर हो रहा है, बहस संसद में होने की जगह टी.वी. चैनल पर हो रहा है, मनोरंजन टी.वी. चैनल पर होने की जगह संसद में हो रहा है।

आज की युवा पीढ़ी को हमारे गौरवशाली इतिहास संस्कृति संस्कार एवं सभ्यता से परिचित करवाना होगा। हमें अपने लिए लक्ष्य स्थापित करना होगा। हमारा विकाश हमारे संकल्पों के माध्यम से होगा। निजी स्वार्थ के ऊपर देश का स्वार्थ को रखना होगा। स्वतंत्रता एक अवसर प्रदान करता है हमें स्वयं का भविष्य चुनने के लिये। १९४७ में जो पथ हमने चुना है, उसके फलस्वरूप देश सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। इसमें कोई शक नहीं कि आने वाला समय भारत का होगा। हमारे पास प्राकृतिक आर्थिक संसाधन प्रचुर मात्रा में है हमारा मानव संसाधन तो पूरे विश्व में अपना डंका बजा रहा है। तो फिर हमें कौन रोक सकेगा। अपने स्वर्णिम मंजिल पाने से। हमारे संकल्पों एवं प्रयासों की कमी ही सिर्फ बाधा बन सकती है।

शिव कुमार लोहिया

बाहुबली

चिड़ियाँ जानती हैं
जितना भी ऊपर उठो
ठिकाना धरती पर है।
ऊपर उठने के बाद
मानव के पांव
धरती पर नहीं टिकते।
भूल जाता है वह
अपनी प्रकृति को।
हाथ में आ जाती है
स्वार्थ की दूरबीन
अपने जिसमें बौने
लगते लगते हैं।
उस दूरबीन से
दूर-दूर तक की खुशियाँ
बटोर कर अपने
संदूक में भरने की
कोशिश में वह
चारों ओर दीवार
खड़ी कर लेता है।
दूरबीन बन जाता है
उसकी दृष्टि का विस्तार।
बाहर की दुनियाँ
हो जाती हैं बेगानी
हवा में उड़ने, पानी पर
चलने की कोशिश में
धरती का संतुलन
वह खो देता है
धारण कर लेता है
बाहुबली का लिबास।
अंत में राम या
कृष्ण द्वारा दंडित होकर
अनमोल मानव जीवन
व्यर्थ में गंवा देता है।

— शिव कुमार लोहिया

अध्यक्षीय

गौरवशाली इतिहास की नींव पर भविष्य के भव्य भवन का निर्माण किया जा सकता है

– गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

समाज के सभी स्नेही बंधुओं का यथा योग्य अभिवादन।

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।

प्रभु से यही अनुनय विनय है कि आप सब स्वस्थ एवं सुखी रहें।

शरद ऋतु का आगमन हो चुका है। ठंढ की हल्की रलक सुबह शाम अनुभव होने लगी है। हेमंत प्रवेश द्वार पर अपनी बारी के आने के इंतजार में खड़ा है। पित्तरों का स्मरण करने और उनको सम्मान प्रदान करने का पक्ष पितृपक्ष शुरु हो चुका है। पितृपक्ष के पश्चात शक्ति के प्रतीक नवरात्र का शुभारम्भ हो रहा है। कोलकाता की दुर्गा पूजा को विश्व विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है, जिसको लेकर बंगाल में इस बार बहुत उमंग एवं उत्साह है।

मजबूत एवं गौरवशाली इतिहास के बावजूद आज अपना समाज अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है।

वैवाहिक संबंध विच्छेद इसमें अहम है। अपने धर्म ग्रंथों में डिवोर्स या तलाक जैसे शब्दों की कल्पना भी नहीं की गई थी। संबंध जन्म जन्मांतर के लिए होते थे। पहले लड़कियाँ ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं होती थी। स्वावलंबी भी नहीं थी। अतः सामंजस्य बनाकर संबंध निभाना जानती थी। मां-बाप से भी यही शिक्षा मिलती थी। सहनशीलता का पाठ पढ़ाया जाता था। ऊँच-नीच का ध्यान रखती थी। बड़ों के प्रति स्नेह और सम्मान था। स्त्री का भी परिवार में आदर सत्कार रहता था। हर पारिवारिक मामलों में उनकी सलाह ली जाती थी। आज परिस्थितियाँ विपरीत हैं। यह अच्छी बात है की आज लड़कियाँ पढ़ लिखकर स्वावलंबी हो रही हैं परन्तु कही-कही सहनशीलता एवं पूज्य जनों के प्रति सम्मान का अभाव हो रहा है। अपनी बात को ही हर समय महत्व देना चाहती है। सामंजस्य व समन्वय की सीख गायब हो गई है। सास ससुर को पहले अपने माँ-बाप के तुल्य समझा एवं पूजा जाता था, अब ये बेगाने लगने लगते हैं। आजकल लड़कियाँ अपने माँ-बाप के प्रति तो अनन्य प्रेम और स्नेह रखती हैं परन्तु सास ससुर के प्रति नहीं। वह यह भी चाहती हैं कि उनका भाई भाभी माँ बाबूजी की सेवा सुश्रुसा करें जबकि इसके विपरीत वह स्वयं ऐसा नहीं करना चाहती। पढ़ लिख कर भी आजकल की लड़कियों में असली ज्ञान और समझ की कमी है।

दूसरी ओर इस समस्या के लिए लड़के और उनके परिवार वाले भी कम जिम्मेदार नहीं है। यह अच्छी बात है कि आजकल लड़कियां ऊँची पढ़ाई कर रही हैं और काम भी कर रही है। आजकल शादी की उम्र तक लड़के-लड़कियाँ परिपक्व होजाते हैं। नई पीढ़ी के साथ पुरानी सोच से व्यवहार नहीं किया जा सकता। सभी बातों का ध्यान रखकर बहू को घर में उचित स्थान मिलना चाहिए। आपस में सामंजस्य का अभाव और ईगो के टकराव के चलते रिश्तों में दरार आ जाती है।

इसके अलावा बच्चों का कैरियर बनाने में माँ-बाप खुद अभाव में रहकर भी अपना सर्वोच्च लगा देते हैं परन्तु फल में जो अनादर और एकाकीपन मिलता है वह चुभने वाला है।

संयुक्त परिवार की महता से आजकल के बच्चे अनभिज्ञ हैं। दरअसल उनको अपने स्कूली पाठ्यक्रम के अलावा और कुछ नैतिक एवं व्यावहारिक शिक्षा नहीं दी जाती है। अपने पाठ्यक्रम का बोझ ही बच्चों पर इतना रहता है कि अन्य व्यवहारिक बातों से अनजान रहते हैं। बच्चों के मस्तिष्क में अव्वल आने का या ९० प्रतिशत से ऊपर अंक लाने का मानसिक दबाव बना रहता है, जबकि पहले माँ बाप बच्चों से केवल उत्तीर्ण होने की आशा रखते थे। उनके ऊपर कोई मानसिक दबाव नहीं रहता था। अन्य बातें जानने समझने के लिए वे स्वतंत्र थे। इसलिए कम पढ़े लिखे होकर भी ज्यादा व्यवहार कुशल होते थे तथा अंदर की अच्छी समझ रखते थे। शुरु से ही बच्चों को संयुक्त परिवार की महत्ता बतानी चाहिए तथा अन्य व्यवहारिक बातों का ज्ञान भी देना चाहिए। हर दुख सुख में संयुक्त परिवार साथ खड़ा रहता है परन्तु एकल परिवार में पारिवारिक साथ कहाँ रहता है। ज्यादा कमाने की चाह में आजकल बच्चे अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। आजकल बच्चे जल्दी ही रक्तचाप, मधुमेह, डिप्रेशन, माइग्रेन और हृदय रोग के शिकार हो जाते हैं।

बुजुर्गों के प्रति आजकल सम्मान कम होता जा रहा है। वे बोझ लगने लगे हैं और इसलिए वृद्ध आश्रम में उनको शरण लेनी पड़ती है। यह उचित नहीं है आज जो बच्चे ऐसा कर रहे हैं उनके बच्चे भी उनके साथ ऐसा ही करेंगे। बड़े बुजुर्गों के अनुभव का लाभ वे लेना ही नहीं चाहते। कोई भी विषय में उनकी राय लेना उचित नहीं समझते हैं। वे बुजुर्गों को दकियानूसी, अनपढ़ और गंवार समझते हैं। दरअसल हमने बच्चों को संस्कार दिए ही नहीं। इसमें केवल बच्चों का ही दोष नहीं है। हमारा भी दोष है। मात्र उदाहरण देने से काम नहीं चलेगा, उदाहरण स्वयं को बनना होगा। संस्कारों की नाव को हमने त्याग दिया है। केवल समय की धार के साथ चल रहे हैं। जिस पर पश्चिमी भौतिकवादी सभ्यता का प्रभाव है। पश्चिमी सभ्यता और हमारी सभ्यता में जमीन आसमान का फर्क है। हमारे संस्कार और हमारी सभ्यता जहाँ मानवता का निर्माण करती है वहीं पश्चिमी संस्कार और सभ्यता मात्र अर्थ तक सीमित है। वे रोबोट का निर्माण करते हैं, हम मानव का निर्माण करते हैं। संस्कार के अभाव के कारण ही आज चोरी, डकैती, लूटपाट, हत्या, व्यभिचार रोज दिन की बात हो चली है। समाचार पत्र इन्हीं समाचारों से पटे पड़े रहते हैं। नैतिक शिक्षा एवं संस्कारों का बीजारोपण करना होगा। हमारी शिक्षा पद्धति जो पश्चिम से प्रभावित है उसमें आमूलचूल परिवर्तन करना होगा।

आज समाज में जो आडंबर और दिखावा, समारोह में मद्यपान, प्री वेडिंग फोटोशूट समारोह में ड्रेस कोड, बेचलर्स पार्टी आदि न जाने क्या-क्या सभी कुछ ऐसे ही लोगों की देन है। वह एक अलग श्रेणी है। उनकी देखा देखी अन्य लोग भी उस मकड़जाल में फंसते जा रहे हैं।

मजबूत नींव पर ही मजबूत भवन खड़ा होता है। हमारे बुजुर्गों ने हमारे समाज की नींव बहुत मजबूत बनाई है। हमारा इतिहास बहुत गौरवशाली है। सेवा, सहायता, दान, दया, करुणा, आदर और सम्मान के गारे से जो नींव हमारे बुजुर्गों ने रखी है वह आज भी जीवित हैं।

हमारी नींव संस्कारों से युक्त एवं बहुत मजबूत है। हम सबका दायित्व है कि विरासत का स्मरण रखें एवं बच्चों को संस्कारी बना कर भव्य समाज का निर्माण करें जिसमें समाज का हर वर्ग अपने आप को सुरक्षित महसूस करे।

जय समाज जय राष्ट्र।

राष्ट्रीय अध्यक्ष का दौरा : तमिलनाडु

तमिलनाडु सम्मेलन के सदस्यों का सम्मान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री गोवर्धन प्रसादजी गाड़ोदिया का शुक्रवार २ सितम्बर २०२३ को तेलंगाना दौरे के पश्चात तमिलनाडु प्रांत के दौरे पर पहुँचे साथ में राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री बसंतजी मित्तल का एयरपोर्ट पर तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजयजी गोयल, महामंत्री श्री मुरारीलालजी सोंथलिया, सहमंत्री श्री अमितजी माहेश्वरी तथा समिति सदस्य श्री राज कुमारजी जालान ने स्वागत किया।

संध्या ४ बजे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसादजी गाड़ोदिया, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री मित्तलजी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजयकुमारजी लोहिया, उत्कल प्रांत के अध्यक्ष श्री गोविंदजी अग्रवाल व तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ नगर के प्रतिष्ठित वैष्णव कॉलेज के प्रांगण में स्थापित श्री गणेश मंदिर में पूजा अर्चना की। तत्पश्चात कॉलेज के सभागार में एक सभा रखी गई। जिसमें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, राष्ट्रीय पदाधिकारियों व उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष का स्वागत व सम्मान किया गया। सभा को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गाड़ोदिया एवं संगठन मंत्री तथा उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री गोविंद अग्रवाल ने अपने विचारोत्तेजक उद्‌बोधन से सभा में उपस्थित सभी समाज बंधुओं को नई प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने तमिलनाडु सम्मेलन के कुछ सदस्यों को उनके विशिष्ट योगदान के लिए अंग वस्त्र ओढ़ाकर सम्मान किया।

राष्ट्रीय गान के साथ स्वागत समारोह का समापन हुआ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष का दौरा : तेलंगाना

मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने माहेश्वरी विद्यालय के नवीनतम संसाधनों की प्रसंशा की।

भारतवर्ष में मारवाड़ी समाज ने अपने लोकोपकारी एवं जन कल्याणकारी कार्यों के द्वारा सर्वत्र सराहना एवं प्रशंसा पाई है। चाहे व्यवसाय का क्षेत्र हो, उद्योग का क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र हो हर क्षेत्र में परोपकारी भावना के साथ समाज के हर घटक के विकास को मारवाड़ी समाज ने प्राथमिकता दी है। उपरोक्त बातें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने श्री माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित कबूतरखाना स्थित माहेश्वरी विद्यालय के सभागार में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को सम्बोधित करते हुये कही। गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने ट्रस्ट के चेयरमैन श्री निवासजी बंग के प्रयासों की सराहना करते हुये कहा कि माहेश्वरी विद्यालय द्वारा न्युनतम

शुल्क के साथ उच्च गुणवत्तापूर्ण नवीनतम तकनीक आधारित शिक्षा प्रदान करने का एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

माहेश्वरी विद्यालय के संवाददाता श्याम बंग ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का स्वागत करते हुये विद्यालय की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण दिया। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका मोनिका वर्मा ने विद्यालय द्वारा चलाये जा रहे व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं स्कील डेवलेपमेंट कार्यक्रमों की जानकारी दी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री संजय हरलालका ने अपने सम्बोधन में कहा कि माहेश्वरी विद्यालय द्वारा केरियर निर्माण एवं स्कील डेवलपमेंट के लिये जिस तरह से तकनीक आधारित पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये हैं वे सराहनीय है। संगठन मंत्री बसंत मित्तल ने भी अपने विचार रखें। अवसर पर तेलंगाना प्रादेशिक माहेश्वरी युवा मंच के अध्यक्ष अनिरुद्ध कांकाणी, लक्ष्मीकांत झंवर आदि ने भी मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों का सम्मान किया।

तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का सम्मान कार्यक्रम संपन्न

तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा होटल रॉयलटन में आयोजित सम्मान समारोह में उपस्थित गोवर्धन प्रसाद गाडोदिया, संजय हरलालका, बसंत मित्तल, रमेश कुमार बंग, रामप्रकाश भण्डारी व अन्य।

तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा होटल रॉयलटन में अखिल भारतवर्षीय. मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्यों का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने प्रादेशिक सम्मेलन के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि अंग्रेजी शासकों द्वारा प्रवासियों की नागरिकता समाप्त करने का जो कानून पारित किया था, उसका पुरजोर विरोध करने के लिये वर्ष १९३५ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का गठन हुआ। इसी संस्था के मनीषियों ने जो आवाज बुलंद की उसके फलस्वरूप अंग्रेज सरकार को वह कानून वापस लेना पड़ा। मारवाड़ी सम्मेलन समाज की एकमात्र ऐसी संस्था है, जिसने समय-समय पर समाज में पनप रही कुरीतियों एवं कुप्रथां पर अंकुश लगाने के लिये सार्थक प्रयास किये।

गाड़ोदिया ने कहा कि समाज के वर्ग विशेष में वैवाहिक अवसर पर मद्यपान एवं प्री-वेडिंग शूट की जो कुप्रथा पनप रही है, वह हमारी सभ्यता व संस्कृति के वपरीत है। समाज हित को देखते हुये सम्मेलन आग्रह करता है कि इस कुप्रथा से दूर रहें। राजस्थानी समाज के इतर सामाजिक घटकों एवं संगठनों को इस राष्ट्रव्यापी संगठन के साथ जुड़कर मारवाड़ी समाज की छवि और योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान बनाने मे सार्थक योगदान देना चाहिए। गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया के साथ महामंत्री संजय हरलालका, संगठन मंत्री बसंत मित्तल का स्वागत करते हुये प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष रमेशकुमार बंग ने सम्मेलन द्वारा किये जा रहे जन कल्याणकारी कार्यक्रमों का विवरण दिया। उन्होंने कहा कि सुदूर दक्षिण में मारवाड़ी समाज के सांस्कृतिक मूल्यो, सनातन परम्पराओं का संवर्धन एवं संरक्षम करन का हर सम्भव प्रयास किया जा रहा है। समाज की विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिभाओं को निखारने के लिये और प्रोत्साहित करने में सम्मेलन यथा सम्भव सहयोग कर रहा है।

सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री संजय हरलालका ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर मारवाड़ी सम्मेलन एकमात्र ऐसी संस्था है, जिसमें राजस्थान के हर जाति के लोग जुड़े है। उन्होने तेलंगाना में अधिक लोगों को इस संगठन से जुड़कर प्रादेशिक इकाई को मजबूती प्रदान करने का आग्रह किया। सम्मेलन की विभिन्न प्रादेशिक इकाइयों द्वारा कोरोना काल में की गयी सेवाओं का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि हर समाज ने मारवाड़ी समाज द्वारा किये गये सेवा कार्यों की प्रशंसा की है। सम्मेलन के राष्ट्रीय संगठन मंत्री बसंत मित्तल ने कहा कि सम्मेलन द्वारा मारवाड़ी भाषा को प्रोत्साहित करने के लिये मारवाड़ी भाषा की साहित्यिक कृतियों को पुरस्कृत किया जाता है। साथ ही जरुरतमंद मेधावी विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा हेतु छात्र वृत्ति भी प्रदान की जा रही है।

गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने वरिष्ठ समाजसेवी और राष्ट्रीय संगठन के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. आर.एम. साबू, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष अंजनी कुमार अग्रवाल, हैदराबाद क्लॉथ मर्चेन्टस असोसिएशन के अध्यक्ष सुभाष अग्रवाल, नगर की कई सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़े नरेन्द्र गोयल, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महासभा के पूर्व संयुक्त मंत्री कुचामन निवासी श्याम सुन्दर मंत्री का सम्मान किया। अवसर पर तेलंगाना प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष अनिरुद्ध कांकाणी, कार्यसमिति सदस्य सुमेश बंग, राजस्थानी स्नातक संघ के सदस्य राजकुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष सीएस द्वारका असावा, तेलंगाना फेडरेशन ऑफ चेम्बर्स के पूर्व अध्यक्ष रमाकान्त इत्राणी, प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पारसमल रांका, जगदीश मायछ, गोविन्द राठी, बृजगोपाल असावा, सुरेश शर्मा, अविनाश देवड़ा, दीपक बंग, संतोष सरायवाला, कमल किशोर जाजू, प्रीतम जाजू, पुरषोत्तम असावा, अमित लड्ढा, सीएस द्वारका असावा, राजेश जांगीड़, राहुल असावा व अन्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रादेशिक महामंत्री रामप्रकाश भण्डारी ने किया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक : बंगलौर

समाज के अस्तित्व एवं उज्जवल भविष्य के लिए संस्कार संरक्षण आवश्यक : गाड़ोदिया

समय की धार को कभी कोई रोक नहीं सकता। इसके साथ साथ गरिमा कैसे बनाए रखें, इस पर हम सबको सोचना चाहिए। आज परिवार में बुजुर्गों का सम्मान घटता जा रहा है। तलाक एक विकट समस्या का रूप लेती जा रही है। शादी के बाद माँ का बेटियों के जरूरत से ज्यादा संपर्क में रहना रिश्तों के लिए अभिशाप बनता जा रहा है। मेरा समाज से निवेदन है कि संस्कार बनाके रखिये, संस्कार रहेगा तो ही परिवार बचेगा। परिवार बचेगा तो समाज भी बचेगा। यह बातें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आत्मीय आतिथ्य में बगीचों के शहर बेंगलौर स्थित हरियाणा भवन में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की षष्ठम बैठक में कही। श्री गाड़ोदिया ने कहा कि संस्कार के साथ-साथ हमें सेवा कार्य में भी पीछे नहीं रहना है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमतानुसार समाज-संगठन एवं सेवा के क्षेत्र में आगे आकर अपनी आहुति देनी होगी। श्री गाड़ोदिया ने कहा कि प्रसन्नता की बात है कि हमारे समाज के बच्चे हर क्षेत्र में सफलता अर्जित कर रहे हैं, इससे हमारा समाज सशक्त हो रहा है।

कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष ने दीप प्रज्जवलित कर किया।

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने कहा कि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य समाज सुधार रहा है यह अलग-अलग प्रांतों की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। हमारी उपस्थिति कम से कम ३०० जिलों में होनी चाहिए। जिन प्रांतों में शाखाएँ नगण्य हैं, वहाँ कम से कम पाँच शाखाएं बनाने की दिशा में कदम उठाने की जरूरत है। समाज की नारी शक्ति से खास निवेदन है कि संस्कार, संस्कृति पर ध्यान दे। विवाह समारोह में मदिरापान पर अंकुश जरूरी है। प्री वेडिंग शूट से परहेज करना चाहिए।

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भानी राम सुरेका ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष और महामंत्री के पूरे देश के दौरों से सम्मेलन को और मजबूती मिल रही है। वर्तमान सत्र में संगठन-शक्ति एवं सामाजिकता एकता को बढ़ाये जाने पर विशेष जोर दिया गया है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका विगत कार्यकलापों की संक्षिप्त जानकारी रखते हुए कहा कि समूह नहीं होगा तो कोई काम नहीं होगा। सम्मेलन का काम समाज को सुरक्षित रखना है। जरूरत इस बात की है कि ज्यादा से ज्यादा लोग सम्मेलन से जुड़ें, सदस्य बने और बनाएँ। श्री हरलालका ने कहा कि मारवाड़ी भाषा में सम्बोधन करते हुए कहा कि भाषा हमारी पहचान है। सभी भाषा-भाषी वैवाहिक आमंत्रण पत्र अपनी भाषा में छपवाते हैं, पर मारवाड़ी समाज के लोग या तो हिन्दी में या अंग्रेजी में, क्यों हम अपनी भाषा को विलुप्त होने दे रहे हैं, यह मानसिकता भविष्य में हमारी पहचान के लिए कतई शुभ संकेत नहीं देती।

राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री बसंत मित्तल ने कहा कि दक्षिण भारत सहित जहां जहां सम्मेलन कमजोर है, शाखाएं नहीं है या पंजाब, हिमाचल प्रदेश जैसे प्रदेशों में प्रांतीय गठन की आवश्यकता है, इस दिशा में आगामी दिनों वे कार्य करेंगे।

बैठक को सम्बोधित करते हुए कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. सुभाष अग्रवाल ने कहा कि दक्षिण भारत के बंगलौर में आकर राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित

करने का दूरगामी परिणाम निकलेगा, इसके लिए उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष का आभार प्रकट किया। कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के तहत महिला समिति का गठन कर श्रीमती माया अग्रवाल को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। बैठक में संगठन को व्यापक रूप देने के लिए कुछ अहम निर्णय भी लिए गए।

पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव कुमार लोहिया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित उपस्थित सभी पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि हमारे कई प्रांतीय अध्यक्ष है जिनकी समाज विकास पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आती है, बिहार, झारखंड, असम व ओडिशा प्रांत से ज्यादा खबरें आती है। हम सभी से निवेदन करते हैं कि आप लोग ज्यादा से ज्यादा खबरें और प्रतिक्रिया भेजें।

बैठक में बिहार प्रदेश के अध्यक्ष श्री महेश जालान, उत्कल के अध्यक्ष श्री गोविन्द प्रसाद अग्रवाल, पूर्वोत्तर के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल, तमिलनाडु के अध्यक्ष श्री विजय गोयल, गुजरात के अध्यक्ष श्री गोकुल चन्द बजाज, छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष श्री पुरूषोत्तम सिंघानिया, केरल के श्री नरेन्द्र कुमार ने अपने-अपने प्रान्तों के कार्यकलापों की संक्षिप्त रिपोर्ट रखी।

बैठक को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय लोहिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन सुरेका, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जालान, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री सुदेश अग्रवाल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका, श्री पवन जालान, अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री रमेश चन्द मेरठिया, डॉ. सावर धनानिया, जगदीश गोलपुरिया सहित अन्यों ने सम्बोधित किया।

बैठक में अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कपिल लाखोटिया सहित सर्वश्री बसंत हेतमसरिया, अरुण कुमार बुधिया, सीताराम अग्रवाल, माया अग्रवाल, जया चौधरी, सुरेश जालान, सुभाष झाझरिया, संजय चौधरी, प्रकाश चौधरी, विनोद गोयल, कृष्ण कुमार बगड़िया, अरुण कुमार खेमका, जय किसन बजाज, नीरज कुमार सावरिया, प्रदीप कुमार चौधरी, गोपी किशन खेतान, राजा राम शर्मा, अशोक धानुका सहित अन्य उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन कर्नाटक प्रान्त के महामंत्री श्री शिव कुमार टेकड़ीवाल ने किया।

हर क्षेत्र में नया आयाम स्थापित कर रहा है मारवाड़ी समाज : गोवर्धन गाड़ोदिया

मजबूत नींव पर ही भव्य भवन का निर्माण हो सकता है। मारवाड़ी समाज हर क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर रहा है एवं यह शिखर यात्रा निरन्तर जारी रहनी चाहिये। हमें सुंदर भविष्य का निर्माण करना है। यह बातें अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने सम्मेलन के केंद्रीय सभागार में आयोजित सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा में कहीं।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि आज बैठक लाभप्रद है। इतने लोगों के विचारों का आदान-प्रदान हुआ। यही सम्मेलन है। सम्मेलन का यही मानना है कि ज्यादा से ज्यादा लोग जुड़ें, सभी प्रांत जुड़ें। सम्मेलन की रोजगार सहायता उपसमिति के तहत हजारों बच्चों को नौकरियां दिलवाई जा रही है। सम्मेलन की राजनैतिक उप समिति के तहत समाज की गरिमा बढ़ी है। श्री शर्मा ने कहा कि सम्मेलन का मूल सिद्धांत समाज सुधार है। हमें इससे भटकना नहीं है।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रह्लाद राय अगरवाला ने कहा कि वार्षिक साधारण सभा में इतने सारे लोग पहुंचे है। यह अच्छा संकेत है। सम्मेलन दक्षिण भारत के सभा प्रांतो तक फैल चुका है, पर हमें रुकना नहीं है। सम्मेलन को और बड़ा करना है, ताकि कभी कही भी समाज बंधुओ पर मुसीबत आये, किसी पर आंच आये तो हम सरकार एवं प्रशासन तक अविलम्ब अपनी बात रख सकें। सम्मेलन को आगे बढ़ाने के लिये स्वस्थ चर्चा करें ताकि सम्मेलन और ज्यादा मजबूत हो। आप सभी जानते हैं कि एकता में दम है। इसलिये आप सभी सम्मेलन से ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़े। जोड़ने से ही सम्मेलन बढ़ेगा।

सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका सम्मेलन में उपस्थित पदाधिकारीगण का अभिवादन करने का बाद वार्षिक साधारण सभा में वित्तीय वर्ष २०२१-२२ के दौरान सम्मेलन के क्रिया-कलापों का विवरण सबके समक्ष प्रस्तुत किया।

सम्मेलन की वित्तीय सलाहकार उपसमिति के चैयरमेन श्री आत्माराम सोन्थलिया, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका एवं पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री कैलाशपति तोदी ने २०२१-२०२२ का आय-व्यय एवं संतुलन पत्र सभा पटल पर रखा जिसे कुछ संशोधन के साथ अंगीकृत किया गया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मौके पर सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भानीराम सुरेका, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री रतन शाह, श्री शिवकुमार लोहिया सहित सर्वश्री प्रह्लाद राय गोयनका, नवरतन मल सुराना, ओम प्रकाश अग्रवाल, नंद किशोर अग्रवाल, अशोक पुरोहित, राजेंद्र राजा, नारायण प्रसाद डालमिया, राधा किशन सफर, पियूश क्याल, राजेश जैन, रतन लाल अग्रवाल, दिनेश जैन, संतोष हरलालका, सांवरमल शर्मा, शंभू कुमार मोदी, पवन कुमार जालान, डा. सांवर धनानिया, शिव रतन अग्रवाला, मनमोहन गाड़ोदिया, संजय शर्मा, राजेंद्र प्रसाद मोदी, नंदलाल सिंघानिया, पवन कुमार बंसल, किशन किल्ला, केएन गुप्ता, संजीव कुमार केडिया, विष्णु अग्रवाल, सिद्धांत जोशी, निखिल शाह, नवीन गोपालिका, सुदेश पोद्दार, ब्रिज मोहन धूत, अशोक कुमार गुप्ता, नवीन अग्रवाल, शिव कुमार अग्रवाल, प्रकाश किल्ला, इंद्र चंद्र बंसल व अन्य कई समाजबन्धु उपस्थित थे।

COMPLETE ELECTRICAL SOLUTION
ELECTRICAL WIRES
FANS AND LIGHTS
LT PANEL, CABLE TRAY AND TRANSFORMER
WE MANUFACTURE
POWER TRANSFORMER
DISTRIBUTION TRANSFORMER
LT ELECTRICAL PANEL
PERFORATED CABLE TRAY
LADDER-TYPE CABLE TRAY
GARODIA ENTERPRISES
AARNAV POWERTECH
MARKET ROAD EAST, UPPER BAZAR
RANCHI - 834 001, JHARKHAND
www.aarnavpowertech.com
garodia@garodiagroup.com
0651-2205996

प्री-वेडिंग शूटिंग को बंद करने की जरूरत : मेहता

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से शनिवार १७ सितम्बर २०२२ को सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय में एक वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबीनार का विषय मारवाड़ी समाज-वर्तमान परिप्रेक्ष्य था। जिसके मुख्य वक्ता समाजसेवी, सलाहकार कवि व लेखक श्री वीरेंद्र मेहता थे।

समाज के सभी बंधुओं का स्वागत करते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने कहा कि श्री वीरेन्द्र जी एक प्रख्यात कवि, लेखक के साथ समाजसेवी भी है। आज हमें खुशी है कि वह हमारे बीच है। हम उनका अभिनंदन करते है।

मौके पर मुख्य वक्ता श्री वीरेंद्र मेहता ने कहा कि मारवाड़ी समाज कम से कम लागत में ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाता है। पर समाज में कई ऐसी प्रथा आ गयी जिससे समाज पीछे जा रहा है। इसी में से एक है प्री-वेडिंग शूटिंग। इसे बंद करने की जरूरत है। श्री मेहता ने बताया कि आज समाज में परिवार टूट रहे है। इस पर भी हमें विचार करना जरूरी है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सेमिनार उपसमिति के चेयरमैन शिव कुमार लोहिया ने संगोष्ठी का संचालन किया एवं संयोजक श्री दिनेश जैन ने मुख्य वक्ता श्री मेहता का परिचय दिया।

मौके पर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुँगटा और श्री राम अवतार पोद्दार, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका, श्री कैलाश पति तोदी, श्री रमेश कुमार बंग, श्री नवीन गोपालिका, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री सुरेश कमानी, श्री मानिक दमानी, श्री विजय कुमार लोहिया, श्री ओम प्रकाश खंडेलवाल, श्री बाबू लाल पोद्दार, श्री नंद किशोर अग्रवाल, श्रीमती सुमित्रा मेहता, श्री नरेन्द्र मोहता, श्री अनिल जाजोदिया, श्री रवि लोहिया, श्री ओम प्रकाश टिबड़ेवाल, श्रीमती सुनिता लोहिया, श्री पवन जालान उपस्थित थे।

परनिन्दा क्यूं?

आपां परनिन्दा करतां-करतां थकां कोनी – धोबी रे पाट स्युं मैल ही निकलसी, इयांइ निन्दा युं मैल ही सामने आसी। पांच भाई मैला हुय गया, के पांच बाइयां - एक - दूसरे री निन्दा – धोवी पाटो बण जावै। जकां स्युं कोई लेणो-देणो नहीं उणां री भी चर्चा करता शंका कोनी। पराइ निन्दा आपस रौ बैर बढ़ावै – एक–दूसरे रो बोलणो–चालणो तो बन्द करावे ही, सागै–सागै एक दूसरे रौ बुरौ करता संकै कोनी। इ वास्ते बेमतलब री कोइ री भी आलोचना निन्दा नहीं करणी।

– साभार : सीखड़ै री बातां

चार दिन जिन्दगानी रा

जिन्दगानी चार दिन री। कता जाल बिछाय लेवां - सागै कीं नहीं चालणै रौ। घणोई घन जोडयौ, माया भेली करी – विश्राम रो नाम ही नहीं। कदैइ भजन भाव कोनी करा अब जावंती टेम आ माया तो अठैई रेय जासी – सागै नहीं चालणी री, हां चौखा करम धरम करयोडा है वै सागै जासी, पण बै तो कदेइ करया ही कोनी – आबै पछताणै स्युं कुछ नहीं हुणै को। ई जिन्दगानी रा चार दिन पूरा हुवा।

– साभार : सीखड़ै री बातां

चिंतन

संस्कारों की नाव पर समय की धार पर...

हमारे अध्यक्ष श्री गाड़ोदिया जी ने इस सत्र के शुरु में हमें उपरोक्त ध्येय वाक्य दिया था।

बहुतों को इसका भावार्थ समझ में आया, और बहुतों को शायद नहीं आया। और बहुत लोग समझ कर भी अनजान बने हुए है, और संस्कारों की नाव को त्याग कर समय की धार पर बह रहे हैं।

हमारा समाज बहुत से क्षेत्रों में आगे है, लेकिन संस्कारों के मामले में हम पिछड़ रहे हैं। मुझे पता नहीं यह बात कितने लोगों के मन में आती है।

समय की धारा पर हम किधर जा रहे हैं, इस पर विचार करना चाहिए। विषय बड़ा है, विस्तार में जाने से भटकने का डर है।

इसलिए संक्षेप में कहूंगा।

आप समझदार लोग, 'थोड़ो कहयो - ज्यादा समझियो', वैसे भी कहा जाता है - समझदार को इशारा काफी है।

'संस्कार' की शब्दों में व्याख्या करना कठिन है।

शायद मनुष्य धर्म निभाना ही संस्कार है।

अब धर्म क्या है यह भी एक बहुत बड़ा विषय है।

चलिए अभी सिर्फ आधुनिक गृहस्थ जीवन के धर्म, की बात करते है।

आज बहुत से परिवारों में सुख शांति की कमी हो गई है, लोग सहते हैं, कहते नहीं।

कारण कई हो सकते हैं जैसे - संयुक्त परिवारों का विघटन; परिवार में स्वस्थ संवाद के लिए समय का अभाव और आधुनिक शिक्षा पद्धति।

कुछ लोग संयुक्त से ज्यादा एकल परिवार पसंद करते हैं, कई परिवारों में संवाद और समन्वय की कमी के चलते समस्याएं खड़ी हैं। दांपत्य जीवन में बिखराव हो रहा है।

कोई कहता है कि बहू को बेटी का दर्जा नहीं मिलता, कोई कहता है की बहू का पीहर वालों के प्रति ज्यादा झुकाव रहता है।

मानवीय मूल्यों के बारे में भी बड़ों का अनुभव बेकार माना जाता है।

रहन-सहन, बात-व्यवहार, खानपान और पहनने-ओढ़ने में अनुचित स्वच्छंदता का चलन है।

नई पीढ़ी का भाग्य और भगवान पर भी विश्वास नहीं रहा।

सामाजिक स्तर पर भी - सभी प्रकार के आयोजनों में सामर्थ्य का प्रदर्शन और मनमानी होती है, यह अहंकार का ही एक रूप है।

कहीं-कहीं तो देखा देखी में सामर्थ्य से ज्यादा आडंबर किया जाता है।

यह सत्य है कि परिवर्तन जीवन का नियम है, लेकिन यह हमारे विवेक पर है कि हम किस परिवर्तन को अच्छा समझें और किसको बुरा।

विचार यह करना है कि क्या कोई परिवर्तन परिवार को सुख शांति और सफलता की ओर; और समाज को अच्छे भविष्य की ओर ले जा रहा है, या पतन की ओर।

बुरे परिवर्तनों को, समय के परिवर्तन के नाम पर सहज स्वीकार कर लेना, – "जींवती हुई मक्खी निगलने" के जैसा है, क्योंकि समय की धार चाहे कैसी भी रहे, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में व्यवहार और आधारभूत मूल्य कभी नहीं बदलते।

मनुष्य को बुद्धि और विवेक इसलिए मिला है कि वह अच्छे बुरे की पहचान कर सके, इसलिए नहीं कि वह मनमानी करने के लिए बहाने ढूंढ ले।

सारांश यह है कि, समय के साथ हमारे परिवारों में, हमारे समाज में, जो विकृतियां आती जा रही हैं, उनका उपचार हम कैसे करें।

हमारी सोच ही ज्यादातर समस्याओं की जड़ है, जिसे विचारों के मंथन से ही प्रभावित किया जा सकता है।

मेरा सुझाव है कि सभी जगह कम से कम तीन महीने में एक बार, अलग-अलग विषयों पर चर्चा करवाई जाए, जिसमें ज्यादा से ज्यादा, सभी उम्र और वर्ग के लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

कभी-कभी किसी विषय से संबंधित किसी विशेषज्ञ को भी बुलाया जा सकता है।

ऐसे कार्यक्रमों की व्यवस्था में बहुत खर्च या परेशानी नहीं होती बस लगन चाहिए।

अगर केंद्रीय समिति ठीक समझे तो प्रांतीय समितियों को ऐसा करने का आग्रह कर सकती है।

इन कार्यक्रमों के सफल आयोजन के लिए विषय चुनना और नियम बनाना प्रांतीय समितियां कर सकती है।

इन कार्यक्रमों में जो विचार निकल कर आएं उन्हें लिखित रूप में समाज विकास में, अन्य प्रांतीय कार्यक्रमों के साथ, प्रकाशित किया जा सकता है।

कोशिश करने में हर्ज क्या है।

पाठकों से निवेदन है कि इस विषय पर वह अपने विचार समाज विकास के माध्यम से सामने रखें।

मुझे पूरी आशा है कि हम, दूसरे समाज के लोगों के लिए, इस मामले में भी प्रेरणा बनेंगे, कि संस्कारों की नाव पर, समय की धार पर; कैसे चला जा सकता है।

इस आलेख के लेखक हैं
– (न्यायमूर्ति रमेश कुमार मेरठिया अ.प्रा.)

संसदीय लोक लेखा समिति के सदस्यों का सम्मान

संसदीय लोक लेखा समिति के चेयरमैन श्री अधिरंजन चौधरी के नेतृत्व में नगरागमन पर पधारे सदस्यों का तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से सम्मान करते हुए प्रादेशिक अध्यक्ष रमेश कुमार बंग, साथ में सी.एस. सुमन हेडा, अनिरुद्ध कांकाणी, सुमेश बंग एवं अन्य।

संसदीय लोक लेखा समिति के चेयरमैन श्री अधिरंजन चौधरी के नेतृत्व में संसद सदस्य जगदम्बिका पाल, रामकृपाल यादव, श्यामसिंह यादव, डॉ. सत्यपाल सिंह, डॉ. थम्बी दोराई, भतृहरी मेहताब, प्रतापचंद्र सारंगी, शक्ति सिंह गोहिल और समिति के निदेशक तीर्थंकरदास, लोकसभा के सहायक सचिव पंकज कुमार शर्मा, प्रदीप्तो राजपंडित-निजी सचिव, अशीको अलेमो, एक्जीक्युटीव ऑफिसर, राहुल गुप्ता के नगरागमन पर होटल फलकनुमा पैलेस में तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से प्रादेशिक अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने उनका सम्मान करते हुये मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण देते हुए बताया कि एक शताब्दी से अधिक समय से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन राष्ट्रीय स्तर पर रचनात्मक कार्यों से एक सुदृढ़ संगठन के रूप में अपनी सार्थकता सिद्ध कर रहा है। सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वहन की प्रबल भावना के साथ कर्त्तव्य निष्ठा व समर्पित वरिष्ठजनों ने समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों को निर्मूल करने के लिये ठोस कदम उठाये। देश के हर वर्ग के सर्वांगीण विकास की यात्रा में एक सुसंगठित और परोपकारी समाज के रूप में मारवाड़ी सम्मेलन की प्रादेशिक इकाइयों ने सर्वत्र सराहना प्राप्त की है।

संसदीय समिति के सदस्यों ने मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियों की सराहना करते हुए कहा कि संगठन अपनी देश व्यापी व्यापकता एवं सक्षमता से जन कल्याणकारी कार्यक्रमों से सार्थकता सिद्ध की है। मारवाड़ी समाज ने व्यवसाय के हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी से देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान दिया है। समाज के साथ राष्ट्र हित को सदैव प्राथमिकता देते हुए मारवाड़ी समाज अपने उद्योग व व्यवसाय के बल पर बेरोजगारी कम करने में भी सहयोग कर रहा है।

स्वागत करते समय तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सी.एस. सुमन हेडा, अनिरुद्ध कांकाणी, सुमेश बंग, अवधेश सिंह एवं अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

७५ पार का सबब

— रतन लाल बंका, रांची, झारखंड

जिन्दगी का क्या भरोसा कब मालिक का फरमान आ जाए
तोड़ने पके फलों को कब माली का अरमान हो जाए

आंखों की रोशनी भी अब काफी कम हो चली है
पता नहीं कब ये यारों को भी कहीं पहचान ना पाए

कानों से भी अब ऊंचा सुने लगा है
वह तकलीफ का मंजर होगा गर अपनों को भी सुन ना पाए

यारों संग भी क्या महफिल जमेगी
जब बात बात पर बोल न निकले और जुबान लडखडा जाए

कुछ गिर गये कुछ हिल रहे कुछ सेनसेटिव हैं
दलिया, खिचड़ी, रोटी दूध में चूरकर ही अब खा पाए

कुछ कदम चलने पर ही सांसे फूलने लगी है
पता नहीं किस वक्त सांसे चलते चलते बेजान हो जाए

बोला, सुना, देखा, रखा, याद कुछ रहता नहीं
दवाइयां सब अब बेअसर कोई सुधार ना हो पाए

लिखावट जो कभी होती थी मोतियों की तरह
अब हरफ फिसल रहे हैं अंगुलियों के साथ पढ़ने में न आ पाए

घुटनों में भी दर्द और खडखडाहट होने लगी है
नी गार्ड पहनता हूँ पर शायद लकडी सहारा न हो जाए

रहता हैं पेट फूला फूला साफ नहीं होता है
अभी इसबगोल का सहारा हैं पर कब तक क्या कहा जाए

लघु शंका जल्दी जल्दी रुक रुक कर होने लगी है
नींद में होने लगा हैं खलल नींद पूरी ना हो पाए

मिजाज खुश रखो यह ७५ पार का सबब है यारों
कम बेसी सभी झेलते हैं जैसी प्रभु की मर्जी हो जाए

प्रभु में मन लगालो अब समय समीप आ रहा
आवागमन से मिले राहत ऐसा कुछ काम हो जाए

शिक्षक ही ऐसा प्रकाश पुंज है जिसके ओज से विद्यार्थी की अज्ञानता और संशयों के अंधकार दूर होते हैं- रमेश कुमार बंग

अपने लक्ष्य को वही प्राप्त कर सकता है जिसे लक्ष्य के अतिरिक्त कुछ नजर ही नहीं आता। आपका शिक्षक आपके जीवन का लक्ष्य बता सकता है, लक्ष्य तक पहूँचने का मार्ग बता सकता है आपकी इच्छा शक्ति और आत्मबल को जाग्रत कर सकता है परन्तु प्रयास स्वयं विद्यार्थी को करना ही पड़ता है। मन में एकाग्रता के साथ रास्ते के भटकाने वाले प्रलोभनों से दूर रहने का संयम एवं अनुशासित जीवन जीने की कला एक शिक्षक ही सीखा करता है। उपरोक्त बातें तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने कबूतरखाना स्थित माहेश्वरी विद्यालय में शिक्षक दिवस पर विद्यालय के सभागार में आयोजित शिक्षक सम्मान कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कही।

शिक्षक सम्मान समारोह के प्रारंभ में विद्यालय के संवाददाता श्याम बंग ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि माहेश्वरी विद्यालय में न केवल पुस्तकीय ज्ञान पर ध्यान दिया जाता है अपितु विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास, सांस्कृतिक मुल्यों की महत्ता, देश के प्रति कर्त्तव्य बोध एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाता है। विद्यालय के परिसर में तकनीकि शिक्षा के नवीनतम संसाधन जहाँ विद्यार्थी को शैक्षणिक गतिविधियों पर नवीनतम जानकारी देते हैं वहीं पर विद्यार्थी के मन में पर्यावरण सुरक्षा तथा विज्ञान में अभिरूचि को बढ़ावा भी मिलता है।

विद्यालय की प्रधानाध्यापिका मोनिका वर्मा ने भी विद्यार्थियों के कला कौशल पर जानकारी दी। प्रादेशिक सम्मेलन की ओर से अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने विद्यालय के शिक्षक महेश काबरा, संगीता पंवार, संतोषी, राधा, सुनीता, मेहराज, शैलजा, लक्ष्मी, विनीता, नेहा, पूनम शर्मा, जागृति, हीना, अनीता, सरीता तापड़िया, शीरल वर्मा आदि का शाल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया। सम्मान समारोह के अवसर पर प्रादेशिक सम्मेलन के महामंत्री रामप्रकाश भण्डारी, अनिरुद्ध कांकाणी के साथ विद्यार्थीगण भी उपस्थित थे।

अंधविश्वास और परंपरा कैसे जन्म लेते हैं?

एक कैम्प में नए कमांडर की पोस्टिंग हुई...

इंस्पेक्शन के दौरान उन्होंने देखा कि कैम्प एरिया के मैदान में दो सिपाही एक बेंच की पहरेदारी कर रहे हैं...

कमांडर ने सिपाहियों से पूछा कि वे इस बेंच कि पहरेदारी क्यों कर रहे हैं?

सिपाही बोले - हमें पता नहीं सर, लेकिन आपसे पहले वाले कमांडर साहब ने इस बेंच की पहरेदारी करने को कहा था...

शायद ये इस कैम्प की परंपरा है क्योंकि....

शिप्ट के हिसाब से चौबीसों घंटे इस बेंच की पहरेदारी की जाती है....

वर्तमान कमांडर ने पिछले कमांडर को फोन किया और उस विशेष बेंच की पहरेदारी की वजह पूछी....?

पिछले कमांडर ने बताया - मुझे नहीं पता, लेकिन मुझसे पहले कमांडर उस बेंच की पहरेदारी करवाते थे...

अतः मैंने भी परम्परा को कायम रखा...

नए कमांडर बहुत हैरान हुए....

उन्होंने पिछले के और पिछले-पिछले ३ कमाडंरों से बात की...

सबने उपरोक्त कमाडंर जैसा ही जवाब दिया...

यूं ही पीछे के इतिहास में जाते नए कमांडर की बात फाइनली एक रिटायर्ड जनरल से हुई जिनकी उम्र १०० साल थी।

नए कमांडर उनसे फोन पर बोले-

आपको डिस्टर्ब करने के लिए क्षमा चाहता हूँ सर....

मैं उस कैंप का नया कमांडर हूँ....

जिसके आप ६० साल पहले कमांडर हुआ करते थे।

मैंने यहाँ दो सिपाहियों को एक बेंच की पहरेदारी करते देखा है...

क्या आप मुझे इस बेंच के बारे में कुछ जानकारी दे सकते हैं...? ताकि मैं समझ सकूँ कि इसकी पहरेदारी क्यों आवश्यक है...?

सामने वाला फोन पर आश्चर्यजनक स्वर में बोला-

क्या? उस बेंच का आइल पेंट अभी तक नहीं सूखा...?

समाज में कई रीति रिवाज अभी इस प्रकार ही बने हुए हैं कभी अतीत में जाकर कारण ढूँढ कर देखो।

दिमाग की बत्ती जलाओ अंध विश्वास हटाओ।

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No. : M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**
- **Radiology**
  - MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
  - Ultrasonography | - Colour Doppler Study
- **Cardiology**
  - ECG | - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)
- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

Yours Tastefully
Anmol
हर पल अनमोल
हर घर अनमोल
www.anmolindustries.com | Follow us on:

सम्मान समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

४ सितम्बर २०२२ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सभा का आयोजन हरियाणा भवन, बंगलौर में कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में किया गया।

इस अवसर पर कर्नाटक प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने सम्मान समारोह एव सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया। हरियाणा भवन के विशाल सभागृह में समारोह का शुभारंभ संचालक श्री अरुण खेमका ने बन्देमातरम् गीत एवं सह संचालक संजय चौधरी ने स्वागत गीत गाकर किया।

कर्नाटक प्रादेशिक अध्यक्ष श्री सुभाष अग्रवाल एवं सचिव शिव कु. टेकड़ीवाल ने विशाल मंच पर समाज की विशिष्ट गणमान्य अतिथिओं, राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों एवं समाज के विभिन्न विभुतियों को मोमेन्टो देकर एवं शाल उढ़ाकर सम्मानित किया। सम्मानित किये गये अतिथियों में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री

गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भानीराम सुरेका, श्री विजय लोहिया, श्री पवन सुरेका, श्री अशोक कु. जालान, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री सुरेश अग्रवाल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री दामोदर बिदावतका, राष्ट्रीय संगठनमंत्री बसंत मित्तल, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कपिल लाखोटिया एवं साथ ही बिहार अध्यक्ष महेश जालान, उत्कल अध्यक्ष श्री गोविन्द अग्रवाल, पुर्वोत्तर अध्यक्ष ओमप्रकाश खंडेलवाल, तमिलनाडु अध्यक्ष विजय गोयल, गुजरात अध्यक्ष गोकुल चंद बजाज, छत्तीसगढ़ अध्यक्ष पुरुषोत्तम सिंघानियाँ, केरल के नरेंद्र कुमार, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री शिव कुमार लोहिया, श्री पवन जालान, श्री जगदीश गोलपूरिया, चेन्नई के श्री जगदीश शर्मा का आतिथ्य सम्मान किया गया।

साथ में बंगलौर की सामाजिक संस्थाओं के गणमान्य पदाधिकारियों से मारवाड़ी युवा मंच बंगलौर शाखा अध्यक्ष श्री अंकित मोदी एवं अमित मोदी, अग्रवाल समाज के उपाध्यक्ष श्री रतन मिंकल एवं श्री मदन अग्रवाल, अग्रवाल महिला मंडल अध्यक्ष अंजु अग्रवाल, नीरूतायल एवं पूर्व अध्यक्ष मंजु अग्रवाल, पारीख समाज के अध्यक्ष श्री मनोज पारीख, कर्नाट क मारवाड़ी समाज के पूर्व अध्यक्ष श्री विमल सरावगी, दादी

धाम प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री शिव कु. टेकड़ीवाल एवं टीम, मारवाड़ी युवा मंच सेंट्रल के अध्यक्ष श्री रोहित केडिया एवं पूर्व अध्यक्ष संदीप टिबड़ेवाल साथ ही निवर्तमान जज श्री रमेश मेरठिया, डा. प्रेरणा अग्रवाल, श्री अनिल बंसल एवं कोविड के दौरान दिन-रात असाधारण सेवा के लिये श्री प्रतिक अग्रवाल का सम्मान किया गया। तत्पश्चात सम्मेलन की महिलाओं एवं व्यक्तियों ने मनमोहक राजस्थानी नृत्यगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रालुत किया। जिसका सभा में भारी संख्या में उपस्थित अतिथियों ने आनंद उठाया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया ने सारी व्यवस्थाओं एवं सफल आयोजन के लिये प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. सुभाष अग्रवाल एवं कार्यक्रम संचालक श्री अरुण खेमका एवं संजय चौधरी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रांतीय सचिव श्री शिव कुमार टेकड़ीवाल ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया और उपस्थित अतिथियों से राजस्थानी भोज का आनंद लेने का आग्रह किया।

प्रादेशिक समाचार : उत्कल

नि:शुल्क चक्षु परीक्षा शिविर का आयोजन

आजादी के अमृत महोत्सव पर उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अंगुल शाखा के तत्वावधान में तीन दिवसीय नि:शुल्क चक्षु परीक्षा शिविर २० सितम्बर २०२२ को प्रारम्भ हुआ जो २२ सितम्बर २०२२ तक होगा। इस कार्यक्रम का आयोजन अंगुल टाउन हॉल में जे.पी. अस्पताल तथा उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा मिलकर किया गया। इस गरिमामयी कार्यक्रम में ओडिशा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर एवं अंगुल के विधायक श्री रजनीकांत सिंह, नगरपालिका चेयरमैन एवं अंगुल शाखा अध्यक्ष श्री रमेश साह, सचिव श्री रोहित लिहाला, मारवाड़ी पंचायत के अध्यक्ष श्री रंजीत मांडोलिया, प्रान्तीय दिशा निर्देशक समिति के सदस्य तथा युवा मंच के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेंद्र गुप्ता की उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम के सूत्रधार तथा उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री गोविन्द अग्रवाल एवं जे. पी. अस्पताल के चिकित्सक तथा तकनीशियन की पूरी टीम उपस्थित थी, प्रथम दिन ही २०० से अधिक लोगो का नेत्र परीक्षण हुआ तथा ९० से अधिक लोगो को चश्मा प्रदान किया गया। अंगुल शाखा के तत्वावधान में यह कार्यक्रम विभिन्न जगहों पर १० दिनों तक रहेगा, सभी जोन से अनुरोध है कि अपन जोन की रूपरेखा तय कर, प्रांतीय प्रभारी श्री कैलाश जी अग्रवाल, कांटाबांजी से सम्पर्क कर इस कार्यक्रम को पूरा कर सकते है।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अंगुल संयोजक श्री गोपाल अग्रवाल, शाखा कोषाध्यक्ष श्री राजेश जिंदल तथा अंगुल शाखा मारवाड़ी के सभी सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं इसके परिचालन में अपना सहयोग दिया।

"ताली बजाओ, रोग भगाओ" कार्यक्रम का आयोजन

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की अकोला शाखा द्वारा विश्व प्रसिद्ध उज्जैन के आयुष्यमान भव ट्रस्ट एवं रिसर्च सेंटर के व्यवस्थापकिय संचालक माननीय श्री अरुण ऋषि का "ताली बजाओ, रोग भगाओ" कार्यक्रम आयोजित किया गया।

स्थानीय गोडबोले प्लाट स्थित शंकरलाल खंडेलवाल महाविद्यालय के नवनिर्मित पद्मानंद सभागृह में आयोजित उपरोक्त कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि के रूप मे मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय महामंत्री निकेश गुप्ता, विधायक गोवर्धन शर्मा, सिद्धार्थ रूहाटीया, शिक्षण प्रसारक मंडल की अध्यक्षा डॉ. तारावाई हातवलने, गोपाल खंडेलवाल, राजस्थानी सेवा संघ के अध्यक्ष सिद्धार्थ शर्मा, मारवाड़ी सम्मेलन के जिलाध्यक्ष बृजमोहन चितलांगे, शहरअध्यक्ष राजकुमार शर्मा, सिद्धेश मुरारका आदि मान्यवर उपस्थित थे।

खचाखच भरे हॉल में अरुण ऋषि द्वारा पावर पॉइंट के माध्यम से १५ सेकंड की ताली से रोगों को कैसे भगाएं का प्रात्यशिक बताया गया एवं स्वदेशी उपाय से विविध रोगों को भगाने की जानकारी दी गई। उपरोक्त कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी कार्यकर्ताओं ने अथक प्रयास किया। कार्यक्रम का संचालन संतोष छाजेड़ ने तथा आभार प्रदर्शन एड. सुरेश अग्रवाल ने किया।

कविता

बिरंखा बींनणी

लूम - झूम मदमाती, मन बिलमाती, सौ बळं खाती,
गीत प्रीत रां गाती, हंसती आव बिरंखा बींनणी।
तौमास म चंतरी चढ.न, सावण पूगी सासरं
भरं भादव ढंळं जवांनी, आधी रंगी आसरं
मन रां भद लुकाती, नणा आंसूडां ढ.ळकाती
रिमझिम आव बिरंखा बींनणी।
ठुमक ठुमक पग धरंती, नखरां करंती
हिंवडां हंरंती, बींद - पगलिया भरंती
छम छम आव बिरंखा बीनंणी।
तीतरं बरंणी चूंदडीण काजळंया री कोरं
प्रम डारं म बंधती आव रूंपाळं गिणगोरं
झूठी प्रीत जताती, झीण घूंघटं म सरंमाती
ठगतीआव बिरंखा बींनणी।
घिर-घिरं घूमरं रंमती, रुंकती थमती
बीज चमकती, झब - झब पळंका करंती
भंवती आव बिरंखा बीनणी।
आ परंदंसण पांवणी जी, पुळं दंख नीं बळां
आलीजा रं आंगण म करं मनां रां मळां
झिरंमिरं गीत सुणाती, भोळं मनइं न भरंमाती
छळंती आव बिरंखा बीनंणी।

संगठन यात्रा एवं अन्य गतिविधियाँ

सम्मेलन की योजनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों को ग्रामो-कस्बों तक पहुँचाने एवं समाज के समस्त बंधु-बांधवों को इनकी जानकारी देने के दृष्टिकोण से जारी समाज परिक्रमा अभियान के अंतर्गत शाहाबाद प्रमंडल की बक्सर, बिक्रमगंज, मोहनियों, भभुआ, कुदरा, सासाराम शाखाओं की संगठन यात्रा संपन्न की गई।

इस सत्र में १५०वीं शाखा की संगठन यात्रा भादो बदी अमावस्या के अवसर पर डेहरी ऑन सोन शाखा के द्वारा आयोजित भाद्रपद महोत्सव में हाजिरी और समाजबंधुओं के साथ महत्वपूर्ण विचार-विमर्श के साथ संपन्न हुई। देश के सर्वश्रेष्ठ बसंतोत्सव के सफल आयोजन हेतु शाखा अध्यक्ष श्री पवन झुनझुनवाला को बिहार गौरव सम्मान प्रदान किया गया। डेहरी में हीं सीए की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले वतन अग्रवाल को सरस्वती सम्मान प्रदान किया गया।

भादो अमावस्या के अवसर पर सीतामढ़ी, सुर्यगढ़ा और पुपरी शाखाओं ने मंगल पाठ का आयोजन किया जबकि दरभंगा शाखा ने श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पेयजल का वितरण किया।

बेंगलुरु में ४ सितंबर २०२२ को आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की षष्ठम् बैठक में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन कुमार सुरेका और प्रादेशिक अध्यक्ष श्री महेश जालान ने भाग लिया। कर्नाटक प्रांत के अति उत्तम अतिथ्य के साथ अनेक महत्वपूर्ण निर्णय से सुसज्जित यह बैठक उद्देश्यपूर्ण रही। बैठक से प्राप्त ऊर्जा का आलम यह रहा कि मात्र एक सप्ताह के अंदर यानि ११ सितंबर २०२२ तक कुल १६८ घंटों में सम्मेलन ५ परिवार से ३३८ नए सदस्ये जोड़े गए।

बिहार में नगर निकायों के चुनावों की सरगर्मियां जोरो पर है। नामांकन आरंभ हो चुका है और अगले महीने तीन चरणों में मतदान कराया जाएगा। बिहार सम्मेलन का पुरजोर प्रयास है कि मारवाड़ी समाज के अधिक से अधिक समाज उम्मीदवार इन चुनावों में अपनी दावेदारी दाखिल करें।

समाचार सार

सनातन शिक्षा के साथ-साथ खेल को बढ़ावा देना जरूरी है - राज्यपाल मिश्र

आत्माराम सोंथलिया का सम्मान

राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र एक दिवसीय दौरे पर मंडावा आए। यहाँ उन्होंने श्री सनातन धर्म पंचायत सीनियर सेकेंडरी स्कूल के शताब्दी समारोह में शिरकत की। इस दौरान राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि सनातन शिक्षा के साथ-साथ खेल को बढ़ावा देना जरूरी है, जिससे छात्रों का शारीरिक व मानसिक विकास हो सके। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के आत्मविश्वास को जागृत करने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना ही सही शिक्षा है। इस दौरान उन्होंने कहा कि तुम जैसा सोचोगे, वैसा ही बन जाओगे। उन्होंने शिक्षकों की ओर ईशारा करते हुए कहा कि शिक्षकों के द्वारा दी गई शिक्षा उत्कृष्ट हो, जिससे बच्चे का सर्वांगीण विकास हो सके। राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि अंधकार से प्रकार की ओर असत्य से सत्य की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने वाले पथ पर पहुँचने की प्रार्थना भारतीय सनातन धर्म में आरंभ से ही हो रही है। उन्होंने कहा कि असतो मा सद्मय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योमां अमृतं गमय - यह प्रार्थना सनातन धर्म से जुड़े संस्कारों का मूल है। ऐसे सनातन धर्म के मूल्यों पर स्थापित इस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करना अपने आप में गौरव की बात है। उन्होंने कहा शिक्षा ही है जो व्यक्ति को निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य करती है, इसलिए जरूरी है कि शिक्षण संस्थाएं इस तरह के शिक्षा प्रसार में रुचि लें, जिससे विद्यार्थियों को संस्कार के साथ-साथ नवाचारों के लिए भी प्रेरणा प्राप्त हो। उन्होंने बताया कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि दुखी, रोने और शर्म करने का कारण निरक्षरता उतना नहीं है जितना अज्ञानता है।

बकौल राज्यपाल कलराज मिश्र शिक्षा का ध्येय यही होना चाहिए कि वह अज्ञानता का हर दर्द समाप्त करे। जो शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए उसी को सार्थकता है। शिक्षा से बहुत बड़े स्तर पर समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है। इस दौरान राज्यपाल मिश्र का ट्रस्टी आत्माराम सोंथलिया के नेतृत्व में शॉल ओढ़ाकर दुपट्टा पहनाकर व साफा पहनाकर सम्मान किया। कार्यक्रम से पूर्व राष्ट्रगान व माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया। इसके बाद समाज व आमजन को शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अग्रणी रहे आत्माराम सोंथलिया का साफा पहनाकर व प्रशस्ति पत्र देकर राज्यपाल मिश्र ने सम्मान किया।

कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल मिश्र ने शताब्दी पुस्तिका का विमोचन किया तथा अनावरण पट्टिका का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र करण शर्मा द्वारा राज्यपाल मिश्र की पेंटिग व विद्यालय की चित्रकारी करने पर सम्मान किया।

कार्यक्रम के दौरान अरुण चुड़ीवाला, ठाकुर रणधीर विक्रम सिंह, सांसद नरेन्द्र खीचड़, जिला कलेक्टर लक्ष्मण सिंह कुड़ी, एसपी मृदुल कच्छावा, पवन कुमार देवड़ा, अतुल चूड़ीवाल, गिरधारी खेमनी, पवन गोयनका, संजय खेमानी, मनीष गोयनका, व्यवस्थापक अशोक दुग्गड़, ओम प्रकाश हरलालका, किरण सोंथलिया, मनीष गोयनका, कमल देवड़ा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

कविता

राजस्थानी भासा!

मेवाड़ी, ढूंढाड़ी सागै
हाडोती, मरुवाणी,
सगळां स्यूं रळ बणी जकी बा
भासा राजस्थानी,

आप आप री मत थे हांको
निरथक खैंचाताणी,
मीरा लिखगी बीं नै मानो
भासा राजस्थानी,

खै भरतपुर अलवर अलघा
आ सोचो क्यांताणी!
हिन्दी री मा सखी विरज री
भासा राजस्थानी,

खोटी सुण सुण सीख, गमावो
थे मत निज रो पाणी,
जनपद री बोल्यां है मिणियां
माळा राजस्थानी,

इण्या गिण्या कीं सबदां नै ले
बिरथा बात बधाणी,
घर में राड़ जगत में हांसी
मेटै राजस्थानी,

कुण बरजै है पोखो सगळा
निज निज घर री वाणी,
आखो राजस्थान जोड़सी
भासा राजस्थानी।

– कन्हैयालाल सेठिया

'अजातशत्रु हैं सामाजिक पुरोधा आत्माराम सोन्थलिया'
मारवाड़ी सम्मेलन ने किया भावभीना अभिनन्दन

जीवन के ८८ बसन्त पूर्ण कर ८९वें वर्ष में प्रवेश करने वाले सामाजिक क्षेत्र के सुविख्यात नाम, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री आत्माराम सोन्थलिया के दीर्घ पारिवारिक-सामाजिक कालखण्ड को समेटे हुए आयोजित कार्यक्रम **'पुष्पित-पल्लवित कुछ क्षण'** में वक्ताओं ने उन्हें न सिर्फ अजातशत्रु बताया बल्कि संस्कारों से लबरेज उनके जीवन को वर्तमान समाज के लिए प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय बताये हुए प्रणाम निवेदित किया।

बलीगंज स्थित कृष्णा निवास में सोन्थलिया परिवार की ओर से आयोजित इस समारोह में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, श्री रामअवतार पोद्दार, श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका, डॉ. जुगल किशोर सराफ, श्री शिव कुमार लोहिया एवं श्री पवन जालान तथा मर्चेन्ट चैम्बर ऑफ कॉमर्स की तरफ से अध्यक्ष श्री ऋषभ कोठारी व अन्यों ने भावभीना अभिनन्दन भी किया।

इस मौके पर श्री सोन्थलिया ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में समाज के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि मैंने अपने जीवन काल में ऐसा कुछ नहीं किया है, जिसके लिए मेरा सम्मान हो, यह सब आप सबका प्यार-दुलार है, जिससे मेरे शरीर में नई उर्जा का संचार हुआ है।

इसके पूर्व वीडियो स्क्रीनिंग के माध्यम से उनके दीर्घ पारिवारिक-सामाजिक जीवन का सचित्र विवरण पेश किया गया, जिसे लोगों न बड़े ही ध्यान से देखा और सुना। इसी माह गत ७ सतम्बर को राजस्थान के मण्डावा में स्थित श्री सनातन धर्म पंचायत हायर सेकेण्डरी स्कूल के शताब्दी समारोह में राज्यपाल श्री कलराज मिश्र के हाथों सम्मानित होने के दृश्यों तथा राज्यपाल के भावों ने लोगों के मानस पटल पर श्री सोन्थलिया जी की एक अलग छवि अंकित कर दी।

कार्यक्रम में पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला सहित सर्वश्री कुंज बिहारी अग्रवाल, घनश्याम शोभासरिया, हरि प्रसाद बुधिया, वरिष्ठ पत्रकार विश्वम्भर नेवर, ओम प्रकाश हरलालका, ललित बेरीवाल, डॉ. ऋषिकेश कुमार, नारायण डालमिया, श्रीमती रुचिरा गुप्ता, संजय अग्रवाल (सेंचुरी), दीपक जालान, जुगल किशोर जाजोदिया, प्रदीप संघई, अरुण कुमार सराफ, किशन कुमार केजरीवाल, शिव शंकर बगड़िया, निमीत बजारोया सहित समाज के अनेक गणमान्य लोगों ने शिरकत की।

उपस्थित लोगों के स्नेह से अभिभूत होकर सोन्थलिया परिवार की ओर से पुत्र अनिल-संजय, पुत्रवधू सुनीता-संगीता, पौत्र अखिलेश, पौत्रवधू वन्दना ने सभी के प्रति आभार जताया।

कार्यक्रम का संयोजन एवं सफल संचालन पत्रकार संजय हरलालका ने किया।

दो लघुकथावां

– इन्द्रजीत कौशिक

(१)
पूनकी

बीबीजी, म्हारी सरदा कोनी इण वास्ते काले म्हें नीं आ सकूंली काम खातर ! आंगणे में पोचो लगावती सोहनी जियां ई आ बात कैयी बियां ई सुमन चिमकी।

'कांई हुयो हमें थारी तबियत ने, आछी भली तो दीसे है थूं'?

'हाड में ताव रैवे जिके खातर डागधर चैकअप सारू बुलायी है। पण थे फिकर मती करो, म्हारी लाडेसर पूनकी आपरो सगळो काम कर जासी।'

'जणे ठीक है, नीतर म्हारे मुसकिल हुय जावंती'। सुमन आ सुण मन में सोच्यो। काल ही तो बीने नौकरी माथै जावणो है। पैले दिन मोड़ो हुय जावतो अगर आ सोहनी नीं अवंती।

साचाणी आगले दिन सोहनी री छोरी काम करबा आ पूगी। दुबली-पतली १२-१३ बरसां री पूनम झटपट घर रो सगळो काम सलटाय दियो। बीं के हाथां री फुरती देख पणी सुमन हकबकाइजनी।

'ओ काम तो हुयग्यो बीबीजी, हमें कांई दूजो काम करणो है, बताय द्यो।' नीची निजरां कर पणी बा सामी ऊभगी।

सुमन घड़ी कांनी देख्यो, हजे स्कूल जावण में खासो टैम बाकी हो। 'हां छोरी, अबे थूं इयां कर पौधां में पाणी पाय दे। आ घास बधगी है, इने काट दे।'

'ठीक है सा।' केय पणी पूनम घर रे लारे बगीचे में जा पूगी। देखतां ई देखतां बा ओ काम भी पूरी कर मेल्यो। सूखा पत्ता उठाय र भैळा कर दीन्हा। आडा पड़ियोड़ा गमला सांवळ जचा'र मेल दिया।

'शाबास छोरी थूं अबे जाय सके।' सुमन साफ सुथरो बगीचो देख पणी खासी राजी हुई। स्कूल जावण रो टैम हुंबतो देख बा बींने जावण सारू कयो नींतर केई दूजा काम कराव लेती।

'आवो सुमन मैडम। इण इस्कूल में आपरो घणो स्वागत करां। म्हाने उम्मीद है क थे टाबरां ने आछी तरह शिक्षा दान देवोला। आ केय'र हैडमास्टर साहब नूंवी टीचर सुमन ने लेय'र पणा किलास कांनी व्हीर हुया।

गुड मॉरनिंग मै'म।' आपरी नूंवी मैडम ने देख पणां सगळ स्टूडेंट ऊभा हुयग्या। सुमन वां री विश रो पडूतर हाथ जोड़ पणा करियो।

जदेई चाणचक बींरी नीजर आगली सीट माथै बैठ्योड़ी पूनकी माथै पड़ी। 'पुनू थूं अठे? तो कांई थूं इस्कूल भी आवे?'

पूनम की केवंती इस्यूं पैला ई हैडमास्टर साहब बोलग्या, इस्कूल आवे रो कांई अर्थाव? पूनम तो म्हारे इस्कूल री टोपमटोप स्टूडेंट है। पढ़ाई-लिखाई स्यूं लेय'र पणी खेल-कूद अर बीजी सगळी बातां मांय इण बज्ची रो कोई मुकाबली नीं कर सके। म्हाने इण पर खासो नाज है।'

अबे तो सुमन रो मुंडो खुलो रो खुलो रेयग्यो। कठे तो बा इण बित्ती भर छोरी ने खाली काम आळी समझे ही अर कठे आ...।

'शाबास बेटा पूनम, म्हने थारे माथै घणो नाज है। थूं इयांई मेनत अर लगन स्यूं आगे बढ़ती रेवेला तो जरूर घर आळा रो नांव रोसन करेला। आ म्हारे दिल स्यूं निकल्योड़ी आसीस है।'

सुमन बीरे सिर पर हाथ फेर कयो तो पूनम बांरा पग छू लिया। सुमन सोचण लागी के अभावां में पल्योड़ी आ छोरी कितरी मेहनत करे। काम में मां रो हाथ बटाय'र पढ़ाई में आगे रेवणो हंसी-खेल नीं है।

'एक कांनी पूनम जिसी मेनती छोर्‌यां है तो दूजी कांनी साधन-संपन्न घरां रा टाबर है, जका खाली पढ़ाई करे फेर बी बे ढंग स्यूं नीं पढ़े-लिखे। अगरजे सगळा टाबर पूनम जेड़ा मेनती हुय जावे तो फेर केणो ई कांई।'

सुमन आप रे विचारां ने बठे ईज विराम दियो अर पढ़ावणो सरू कर दियो।

(२)
घणी घोरी

'इण देश रो कीं नीं हो सके। साफ-सफाई राखण सारू कित्ती बातां करीजे पण हुवणो-जाणो कांई?'

'गुप्ता जी, कांई बात है सा, आज घणा गरम हुय रैया हो?' हरीश जी आपरी गळी रा वाशिंदा गुप्ता जी ने बड़बड़ाता देख पणा रुक'र पूछ्यो।

'देखो, थे तो हर बगत घर के मांय घुस्योड़ा बैठा रेवो, थांने कीं फरक नीं पड़े। पण कदे बारे झांको जब थांने ठाह पड़सी के आपांरी गळी कित्ती सूगली पड़ी है।' गुप्ता जी पडूतर देवंता थकां कयो।

'ईया लागे जियां इण गळी रो कोई घणी-घोरी नीं है।' राकेश जी जद तांई आपरे टापरे स्यूं हाथ म चाय रो मग लेय'र बाण्डे माथै आ पूगा।

एक-एक कर सगळा भेळा हुय'र इण बाबत आप-आप री बंतळ रा तीर छोड़ण लाग रैया हा।

कोई सफाई आळे माथै लानत मेल रैयो हो तो कोई बीं ने हटावण सारू सिकायत करण री बात केवे हो।

इत्ती देर म वांरी जोड़ायतां आप-आप रे घरां रो कूटलो, फळां रा छांतका, बच्योड़ा साग-भांत अर दूजी अलर-बलर चीजां ला-ला'र गळी री सोभा खासी बधाय दीवी ही।

हमें ईंया लागण लागो जइयां आ रेवास री जिन्यां नीं होपणी कोई अकुरड़ी ही। रही-सही कसर पूरी कर मेल दी आवारा गिंडकां अर पसुवां, जका कीं खाणे री आस म ऊभ पणां ङड़बड़-धड़बड़ करणी सरू कर दीवी ही।

हरीश जी खासी देर तांई आपरा पड़ोसियां री बंतळ हुण परा पाछा घर'र मांई बूयगा।

'देखो भायां, हरीश जी रे सूंडा स्यूं एक सबद नीं निकळ्यो। ऐड़ा सवारथी जका मुहळ्ळा में रैया करे बां रा हालात ऐड़ा ई हुया करे। कम ऊं कम आपरे सागै तो आ पणा ऊभता।' गुप्ता जी अर दूजा मिल पणा हरीशजी री माटी पलीद करण म कीं कसर नीं छोड़ी।

स्यात एकाध घड़ी हुई ही क हरीशजी अर वांरा दोई गबरू बेटा मूंडा माथै ढाटो बांध पणा हाथां में लंबळकी झाड़ू ले पणां घर री चौखट स्यूं गली म आ'र एक छेड़े स्यूं कूटलो बुहारणो सरू कर दीवो।

अठीने जियां-जियां कचरो-कांटो साफ हुय रैयो हो, बींया-बींया अब तांई सफाई माथै मोटा-मोटा लेक्चर देवण आळा गळी रा सगळा पाड़ोसी खिसकणा सरू कर दियो।

थोड़ी ताळ म बे भी आप रे हाथां में झाड़ू, ले पणां आ'र हरीश जी रे साथै सफाई म लगगा। कैया करे के एक अर एक इग्यारे हुवे। स्यात घड़ी भर में ईज सगळी गळी बींया इज चमकण लाग्गी।

– चंदन सागर वैल, बीकानेर

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

श्रीकश्यप उवाच

त्वं देव्यादिवराहेण रसायाः स्थानमिच्छता।
उद्धृतासि नमस्तुभ्यं पाप्मानं मे प्रणाशय।।

हे माता पृथ्वी, तुम्हारे द्वारा ठहरने के लिए स्थान पाने की इच्छा करने पर भगवान ने वराह रूप में तुम्हें ऊपर निकाला था। मैं प्रार्थना करता हूँ कि कृपा करके मेरे पापी जीवन के समस्त फलों को आप विनष्ट कर दें। मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ।

नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महीयसे।
सर्वभूतनिवासाय वासुदेवाय साक्षिणे।।

हे भगवान्! हे महानतम्! हे सब के हृदय में वास करने वाले तथा जिनमें समस्त प्राणि वास करते हैं, हे हर एक वस्तु के साक्षी! हे सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वव्यापी परम पुरुष वासुदेव! मैं उनको सादर नमस्कार करता हूँ।

नमोऽव्यक्ताय सूक्ष्माय प्रधानपुरुषाय च।
चतुर्विंशद्गुणज्ञाय गुणसख्यानहेतवे।।

हे परम पुरुष! मैं उनको सादर नमस्कार करता हूँ। अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण आप भौतिक आँखों से कभी नहीं दिखते। आप चौबीस तत्वों के ज्ञाता हैं और आप सांख्य योगपद्धति के मूल कारण हैं।

नमो द्विशीर्ष्णे त्रिपदे चतुःश्रृङ्गाय तन्तवे।
सप्तहस्ताय यज्ञाय त्रयीविद्यात्मने नमः।।

हे भगवान्! मैं उनको सादर नमस्कार करता हूँ जिनके दो सिर (प्रायणीय तथा उदानीय), तीन पाँव (सवन-त्रय), चार सींग (चार वेद) तथा सात हाथ (सप्त छन्द यथा गायत्री) हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ जिनका हृदय तथा आत्मा तीनों वैदिक कांडों (कर्म, ज्ञान तथा उपासना कांड) हैं तथा जो इन कांडों को यज्ञ के रूप में विस्तार देते हैं।

नमः शिवाय रुद्राय नमः शक्तिधराय च।
सर्वविद्याधिपतये भूतानां पतये नमः।।

हे शिवा, हे रुद्रा, मैं समस्त शक्तियों के आगार, समस्त ज्ञान के भण्डार तथा समस्त जीवों के स्वामी आपको सादर नमस्कार करता हूँ।

नमो हिरण्यगर्भाय प्राणाय जगदात्मने।
योगैश्वर्यशरीराय नमस्ते योगहेतवे।।

हिरण्यगर्भ रूप में स्थित, प्रत्येक के जीवन के स्रोत, प्रत्येक जीव के परमात्मा स्वरूप आपको सादर नमस्कार करता हूँ। आपका शरीर समस्त योग के ऐश्वर्य का स्रोत है। मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ।

नमस्त आदिदेवाय साक्षिभूताय ते नमः।
नारायणाय ऋषये नराय हरये नमः।।

मैं भगवान्, प्रत्येक के हृदय में स्थित साक्षी तथा मनुष्य रूप में नर-नारायण ऋषि के अवतार आपको सादर नमस्कार करता हूँ। हे भगवान्! मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ।

नमो मरकतश्यामवपुषेऽधिगतश्रिये।
केशवाय नमस्तुभ्यं नमस्ते पीतवाससे।।

हे पीताम्बरधारी भगवान्! मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ। आपके शरीर का रंग मरकत मणि जैसा है और आप धन-धान्य की देवी लक्ष्मीजी को पूरी तरह वश में रखने वाले हैं, हे भगवान् केशव! मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ।

त्वं सर्ववरदः पुंसां वरेण्य वरदर्षभ।
अतस्ते श्रेयसे धीराः पादरेणुमुपासते।।

हे परम पूज्य भगवान्, हे वरदायकों में सर्वश्रेष्ठ! आप हर एक की इच्छायों को पूरा कर सकते हैं अतएव जो अत्यन्त गंभीर हैं, वे अपने कल्याण के लिए आपके चरणकमलों की धूल को पूजते हैं।

अन्ववर्तन्त यं देवाः श्रीश्च तत्पादपद्मयोः।
स्पृहयन्त इवामोदं भगवान्मे प्रसीदताम्।।

सभी देवता तथा धन-धान्य की देवी लक्ष्मीजी भी उनके चरणकमलों की सेवा में लगी रहती हैं। दरअसल, वे उन चरणकमलों की सुगन्ध का आदर करते हैं। ऐसे भगवान् मुझ पर प्रसन्न हों।

श्री अदितिरुवाच
विश्वाय विश्वभवनस्थितिसंयमाय
स्वैरं गृहीतपुरुशक्तिगुणाय भूम्ने।
स्वस्थाय शश्वदुपबृंहितपूर्णबोध-
व्यापादितात्मतमसे हरये नमस्ते।।

हे भगवान्! आप सर्वव्यापी विश्वरूप इस विश्व के परम स्वतंत्र स्रष्टा, पालक तथा संहारक हैं। यद्यपि आप अपनी शक्ति को पदार्थ में लगाते हैं, तो भी आप सर्वदा अपने आदि रूप में स्थित रहते हैं और कभी उस पद से च्युत नहीं होते क्योंकि आपका ज्ञान अच्युत है और किसी भी स्थिति के लिए सर्वदा उपयुक्त हैं। आप कभी मोहग्रस्त नहीं होते। हे स्वामी! मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ।

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED

RAMKRISHNA FORGINGS LIMITED (RKFL) is India's Second biggest and leading Integrated Forging cum Machining Company. RKFL have Closed Die Forging Hammers, Upsetters, Ring Rolling & Press Lines from 2000 to 12500 Tons. RKFL is a supplier of major OEM's, Tier 1, suppliers globally for Automotive, Mining, Earth Moving, Oil & Gas, Railways and General Engineering Industries.

The Company is accredited with IATF 16949, ISO 14001 (EMS), OSHAS 18001, AS9100D and Testing Laboratories are NABL accredited (ISO/IEC 17025:2005). Its Corporate Office is located is Kolkata & Facilities are in Jamshedpur.

RKFL's product is exported to North America, South America, Europe, Australia, UK, Turkey and Asian Countries.

Regd. & Corporate Office:

23, Circus Avenue, 9th Floor,
Kolkata – 700 017, West Bengal, India.
Office phone : +(91) 033 4082 0900 / 7122 0900
Email – info@ramkrishnaforgings.com
Web site – www.ramkrishnaforgings.com

Overseas Office at:

Detroit-USA, Toluca-Mexico, Istanbul-Turkey.

Plants at:

Plant I, III, IV, V, VI & VII at Jamshedpur, India
Plant: II at Liluah, Howrah, India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2021-2023
Date of Publication - 27th September 2022
RNI Regd. No. 2866/1968

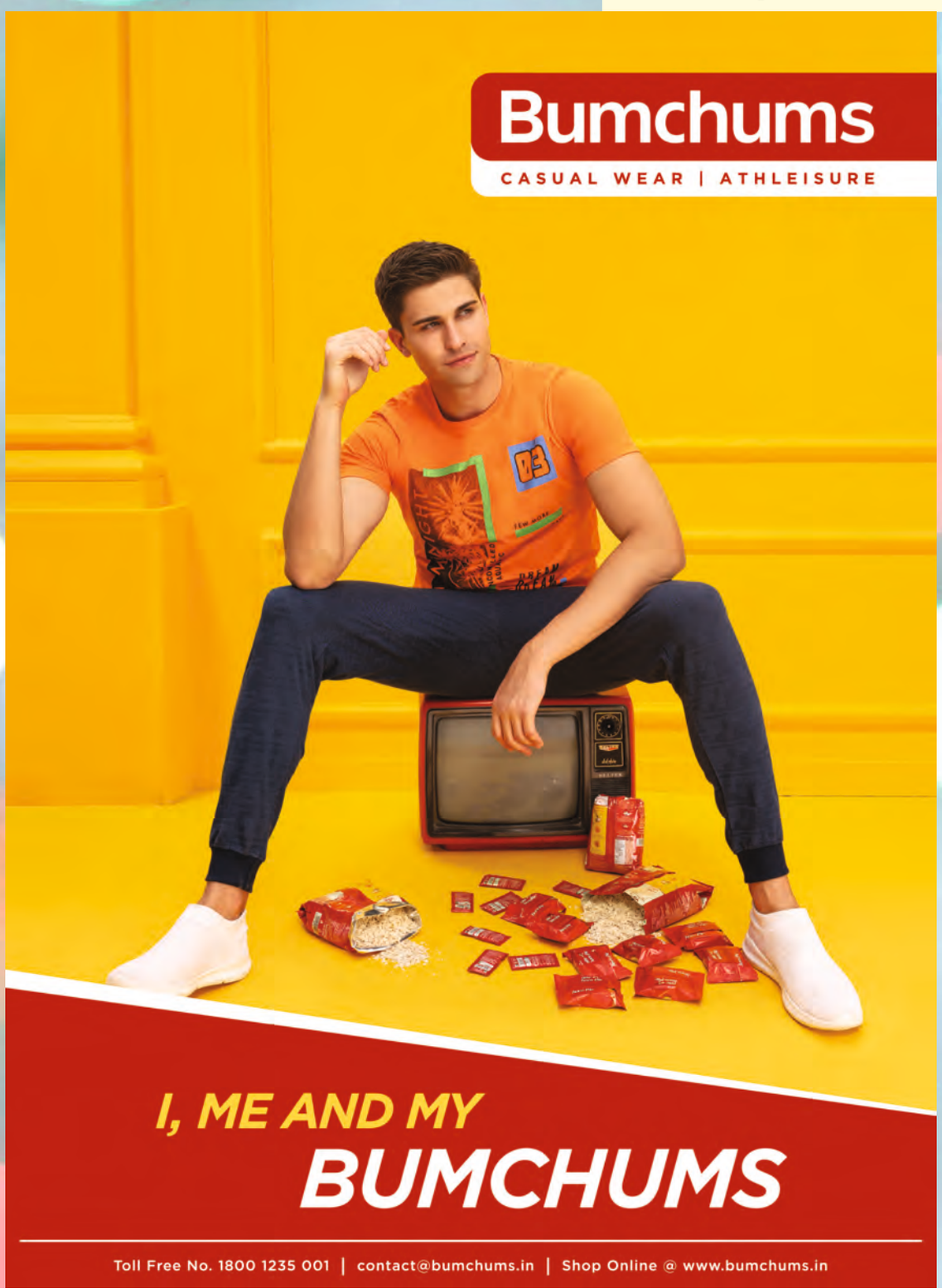

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com